श्यामसुंदर दुबे की

सर्जना का लोकपक्ष

डॉ. प्रियंका राय

लोक स्मृतियों से अनुप्राणित होने वाले रचनाकारों के लेखन में अभी भी लोक की भूमि, लोक की जातवस्तु और लोक की अपनी जीवन प्रणाली जीवित है। लोक से संवेदित ऐसे रचनाकार अपने लेखन में निरंतर स्मृतियों की एक उर्वर जमीन रचते रहते हैं। इस जमीन पर शब्दों की खेती करते ये रचनाकार वर्तमान के जटिल दबावों के बीच अपनी जातीय स्मृतियों को सुरक्षित रखते हुए अपनी परंपराओं की प्रासंगिकता की फलान्विति को सदैव प्रकट करते रहते हैं लोक से उत्प्रेरणायें ग्रहण करने वाले हमारे समय के प्रतिष्ठित रचनाकार श्यामसुंदर दुबे लोक-चिंतक एवं लोक प्रभावी सृजन के एक ऐसे ही रचनाकार हैं, जिनकी अपनी रचनात्मक ऊर्जा प्रवणता लोक के प्राण केन्द्रों से ही संवेदित होती है।

डॉ. दुबे बहुआयामी रचनाकार हैं—वे कथा, कविता निबंध समीक्षा और लोक आदि रचना विधाओं में अपने प्रभूत लेखन के माध्यम से साहित्य जगत में अपनी विशिष्ट पहचान स्थापित कर चुके हैं। उनकी संपूर्ण रचनात्मकता में लोक की आंतरिक शक्तियों को लगातार अनुभव किया जा सकता है। डॉ. दुबे उन विरल रचनाकारों में से है, जिन्होंने लोक को न केवल अपनी रचनात्मकता में अंतर्वर्ती शक्ति की तरह ग्रहण किया, बल्कि लोक की तात्विक विश्लेषण परक उनकी दक्षता ने लोक को समझने की अलग दृष्टि प्रदान की है।

प्रस्तुत कृति में विदुषी लेखिका प्रियंका राय ने डॉ. दुबे की समग्र रचनात्मकता के सन्दर्भ में लोक की पड़ताल की है। उनकी कथा, कविता, निबन्ध, समीक्षा आदि विधाओं में निहित लोक दृष्टि का सम्यक् विश्लेषण इस कृति में सम्भव हुआ है। यह मात्र व्यक्तिपरक लेखा-जोखा नहीं है, बल्कि यह सर्जना और लोक की आंतरिक पड़ताल करते हुए उनकी अंतः क्रियात्मक संरचनाओं की भी प्रस्तुति है। लोक और साहित्य के अध्येताओं को यह कृति अपरिहार्य सिद्ध होगी।

ग्रंथकेतन
1/7342, नेहरू मार्ग
ईस्ट गोरख पार्क
शाहदरा, दिल्ली-110032
फोन : 011-22328044

© : लेखिका
ISBN : 978-81-89270-28-5

मूल्य : 450.00 रुपये
प्रथम संस्करण : 2012
शब्द संयोजन : प्रिंस कम्प्यूटर्स, दिल्ली-110094
मुद्रक : कॉम्पैक्ट प्रिन्टर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032

अनुक्रम

प्राक्कथन 5

सादर-समर्पित 7

व्यक्तित्व विकास एवं लोक-चेतना 11

काव्य में लोक 39

निबंधों में लोक 85

कथा में लोक 135

लोक दृष्टि 180

लोक मूल्य 205

आधार एवं संदर्भ ग्रन्थ सूची 225

डॉ. प्रियंका राय

पिता : श्री ए. एन. राय,

माता : श्रीमती सुलेखा राय,

शिक्षा : एम.ए., पी-एच.डी.

रुचि : भारतीय जन नाट्य संघ (इप्टा) से संबद्ध विभिन्न नाट्य प्रदर्शनों में सक्रिय भागीदारी। शासकीय महाविद्यालय में शिक्षण-कार्य।

पता : महाराणा प्रताप कॉलोनी,
हरदा (म.प्र.), मो. 09669526337

ग्रंथकेतन

1/7342, नेहरू मार्ग, ईस्ट गोरखपार्क
शाहदरा, दिल्ली-32